

नाथपंथी पांडुलिपियों में परिलक्षित परंपरागत चिकित्सा पद्धति: एक नृ - ऐतिहासिक अध्ययन(1000 AD – C.2000AD): उत्तराखंड के सन्दर्भ में

डॉ. विजय बहुगुणा, असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास, वीर केशरी चंद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

डाकपत्थर(विकासनगर), देहरादून, उत्तराखंड

डॉ. सुशील कुमार कगड़ियाल, असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नरेंद्रनगर,

टिहरी गढ़वाल

प्रस्तावना:

नाथ शब्द को व्याख्यायित करते हुए कहा है कि 'ना' शब्द का अर्थ है अनादि रूप से या 'थ' का अर्थ है -स्थापित होना, इस प्रकार नाथ मत का स्पष्टार्थ वह अनादि धर्म है जो भुवनत्रय की स्थिति का कारण है श्री गोरक्ष को इसी कारण से 'नाथ' कहा जाता है(द्विवेदी, 19 50 :3) यह विश्वास किया जाता है कि आदिनाथ स्वयं शिव ही है और मूलतः नाथ सम्प्रदाय शैव हैं।'हठयोग प्रदीपिका' की टीका में ब्रह्मानंद ने लिखा है कि सब नाथों में प्रथम आदिनाथ हैं, जो स्वयं शिव ही हैं।'गोरक्षा सिद्धांत संग्रह' में लिखा है कि इस मत को अवधूत मत भी कहते हैं, गोरखनाथ ने योग जगाकर भक्ति को दूर कर दिया था (द्विवेदी, 1950:1). जान पड़ता है कि नाथपंथ शैव सम्प्रदाय का ही साधना पंथ है(कुकरेती, 2003 :27). नाथपंथ चौरासी सिद्धों से ही निकला है(राहुल, 1953 :162). पँवार वंश राजाओं के मूल पुरुष भीनापाल को सत्यनाथ का आशीर्वाद मिला था।जोशीमठ के कैत्यूरी वंश के राजाओं को नरसिंह नाम के नाथ योगी ने वहां से कत्यूर घाटी में जाने के लिए विवश किया था, पँवारवंशीय राजा अजयपाल तो नाथ सम्प्रदाय में बाबा अजेयपाल के नाम से जाने जाते हैं(कुकरेती, 2003 :36) पंद्रहवीं शताब्दी में नाथ सम्प्रदाय इस क्षेत्र में पुष्पित पल्लवित हुआ।इतिहासकार शिव प्रसाद डबराल ने पँवारवंशी नरेश श्यामशाह का उल्लेख करते हुए कहा कि श्यामशाह प्रातः उठता था, स्नान करके वह विधि विधान से संध्या पूजा करता था, कौलाचारियों की पूजा विधि के अनुसार पूजा करके वह प्रतिदिन माता पिता को तर्पण करता था(डबराल, 40). महीपतिशाह वाममार्गी शाक्त साधक था, अजयपाल के राज्यकाल में देवलगढ़ के सत्यनाथ सम्प्रदाय के नाथ योगियों को जो प्रतिष्ठा प्राप्त हुई थी वह अब तक बनी रही. महीपतिशाह के शासनकाल के सम्वत 1683 आषाढगते के एक शिलालेख से विदित होता है देवलगढ़ में हंसनाथ और प्रभातनाथ बड़े प्रभावशाली विद्वान हुए. कुमाऊं और गढ़वाल के इतिहास से जाना पड़ता है कि 1500 के आसपास गढ़वाल और चम्पावत में सत्यनाथ और नागनाथ नामक दो गोरखपन्थयोगियों ने अपनी खानकाह में डेरे जमाए थे.इनमें नागनाथ सत्यनाथ का शिष्य था, ये दोनों योगी हठयोग को समर्पित थे(कुकरेती, 2003 :68).

शब्दावली:

नाथ, सिद्ध, आपरक्षा, हठयोग, नाथन, नाथपंथी, गूँठ, सदावर्त, मैमन्दा वीर, गोरखनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, नादबुद, घटथापना, , नादबुद, रखवाली, नरसिंह वाली, , समैण, चौड़ियावीर, सैद्धाली, भैरपावली

चिकित्सा पद्धति:

नाथयोगियों ने प्राणायाम को मुख्य आधार माना, उन्होंने योग को एक ऐसा सशक्त माध्यम बताया कि मानसिक परिवर्तन नितांत आवश्यक है। समाज को प्रभावित और नियंत्रित करने के लिए योगियों ने जड़ी बूटियों का उपयोग किया तथा वशीकरण मन्त्रों का भी उपयोग किया गया। जड़ी बूटियों का तो यह क्षेत्र अक्षय भण्डार है, सारी चिकित्सा पद्धति इन जड़ी बूटियों का विभिन्न रोगों के उपचार के लिए के लिए प्रयोग करने के अतिरिक्त बिन्दु की रक्षा के लिए, वन्ध्या स्त्री को संतान प्राप्ति के लिए तथा नवजात बच्चे के लिए उसकी मां के स्तन में दूध की वृद्धि के लिए भी इनका उपयोग किया जाता था। गोरखनाथ के अनुयायियों को योगी, गोरखनाथ और दर्शनी के रूप में जाना जाता है, लेकिन सबसे विशिष्ट रूप से कनफटा के रूप में जाना जाता है (Brigs, G.W.1938:1). इनमें से पहला नाम हठयोग योग के पारंपरिक अभ्यास को संदर्भित करता है, योगी कहा जाता है। नाद बिंदु शब्दों का सम्बन्ध लययोग की साधना से मना गया है, योग विषयक ग्रंथों में विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए कहा है कि लय योग की साधना तथा नाद बिंदु की साधना में अंतर माना गया है, योगियों द्वारा नाद -बिन्दु का प्रयोग कई अर्थों में किया गया है -नाद शब्द का पर्याय होने के कारण वह तत्त्व अथवा परमतत्त्व माना गया है (कुकरेती, 2003 :215). अनहद नाद का आशय है कि बिंदु वीर्य का पर्यायवाचिक है तथा ब्रह्मचर्य साधना के लिए प्रयुक्त होता है (सोलंकी, 1966 :341). बज्रयानी बौद्ध सिद्धों की बाममार्गी साधनाओं के कारण लोकजीवन में जिस ब्रह्मचर्य और संयम की आवश्यकता थी, काया साधन की दृष्टि में नाथपंथी रचनाओं में इस शब्द की बहुलता मिलती है (सोलंकी, 1966 :).

“नाद बिंदु है फीकी सी। जिहि साध्या ते सीधे मिला” (बड़थवाल, गोरखबानी, 61)

संतों में भी नाथपंथी योगियों की भांति नाद और बिंदु के मिलान की साधना का वर्णन मिलता है (सोलंकी, 1966 :342). तांत्रिक साधना का मुख्य उद्देश्य है बिंदु -सिद्धि-बिंदु का उद्बोध एवं कुण्डलिनी का जागरण वस्तुतः एक साधना है।

पंच मकार गोरखनाथ का योग हठयोग नाम से अभिहित है (उपाध्याय, यो.वा., 124). चिकित्सा पद्धति - रोगों के रोकथाम के लिए राज्य की ओर से चिकित्सालय खोलने का उल्लेख नहीं मिलता, अपितु पुरोहित जो कि वैद्य और ज्योतिषी भी होते थे, अपने जजमानों के स्वास्थ्य समृद्धि के लिए और आधात्मिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहते थे, वे जड़ी बूटियों के द्वारा रोगों की चिकित्सा करते थे (डबराल, 545). यद्यपि आयुर्वेद का ज्ञान वैदिककाल से रहा होगा फिर भी नाथ योगियों ने अपनी विशेष पद्धति से अपने अनुभव से लोगों को विशेष

लाभान्वित किया। नाग (सीसे की भस्म, बंग (टीन का भस्म) और वनस्पतियों के प्रभाव से काया पलटने का उल्लेख नाथवाणियों में हुआ है (बड़थवाल, गो ० बा ०, 32) नाथयोगी योगिक क्रियाओं और रासायनिक क्रियाओं पर अवलम्बित रहते हैं (शुक्ल, संगोष्ठी, 26 . 12 . 81, साय 3 . बजे से ४ बजे तक). रसायन, जड़ी बूटी का प्रयोग आज भी करते हैं, योग करके मानसिक परिवर्तन आते हैं और स्वस्थता प्राप्त होती है। धर्म, दर्शन, और विज्ञान का समन्वय जिसमें हो वह तंत्र है, गुरु गोरखनाथ का सारा दृष्टिकोण तांत्रिक था। गढ़वाल के प्रसिद्ध आयुर्वेद के शोधकर्ता पंडित भैरवदत्त अष्टवर्गीय को नाथ निघण्टु नामक एक ग्रन्थ प्राप्त हुआ है, जिसमें विभिन्न पीठों में पाई जाने वाली अद्भुत वनस्पतियों का उल्लेख है। असमय देहांत होने से लुप्त औषधियों का पता लगा पाना दुष्कर हो गया (चंदोला, 198) नाथ निघण्टु नामक ग्रंथ में वनस्पतियाँ का उल्लेख निम्न प्रकार आया है –

“अंचलेश्वरी रा कुंडारा अगाड़ी एक देबरा है। धारा दक्षिण दिसा तर्फ पीपल जैसा पेड़ है। पानों का ऊपर बभूत जैसी है। तोड़ण से दूध निकसतो है। दूध आंख्यों आंजणों भूमि निधान देखें, देव शरण ही सब रोग जायें, खायें तो तीन हजार बरस जीवै, वज्र काया हो”

योगी के लिए देह शुद्धि, रोग निवृत्ति, और स्वास्थ्य वृद्धि के लिए धौति, वस्ति, नेति, लौकिकी, त्राटक, और कपालभीति क्रियाएं अत्यंत आवश्यक योगशास्त्र के अनुसार उपर्युक्त छह कार्य ही शरीर को पूर्ण रूप से प्रभावित नहीं हो सकतीं। अस्तु जान सामान्य के रोग प्रवृत्ति और स्वास्थ्य वृद्धि के लिए निम्नलिखित दो और विधियों का प्रचार प्रसार हुआ -

मन्त्र द्वारा और जड़ी बूटियों द्वारा-मंत्र द्वारा रोग निवारण-सुदूर गाँवों में रोग निवारण के लिए सबसे पहले मांत्रिक की तलाश की जाती है, वह अब पहले के ही सामान सर्वश्रेष्ठ वैद्य समझा जाता है। उत्तराखंड के ग्रामील इलाकों में इसलिए रोग निवारण और शरीर रक्षा के लिए मन्त्र प्रयोग को 'वैदाई' कहते हैं (चंदोला, 198) सिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ द्वारा रचित है, में षट्कर्मों (शान्तिक, बशय, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन एवं मारण) का उल्लेख हुआ है (गौतम, चमन लाल, 20 -21). विश्व की शान्ति के लिए जो किया जाता है उसे "शान्तिक", समस्त जीव जंतुओं को अपने वश में करना वशीकरण, समस्त जीवों की प्रवृत्तियों को रोक देना स्तम्भन, मित्रता का अत्यंत नाश विद्वेषण, भ्रान्ति से देश का त्याग उच्चाटन तथा प्राणियों का प्राण हरना मन्त्र शास्त्रों में मारण कहा जाता है। इंद्रजाल नामक पांडुलिपियों में इनका विशद उल्लेख मिलता है। मन्त्र में ध्वनियाँ होती हैं, ध्वनियों के समूह को मन्त्र कहते हैं। ध्वनि शब्द का सबसे क्रांतिकारी प्रयोग मानसिक रोगियों की चिकित्सा में किया जाता है। शब्द ब्रह्म की शक्ति पर अविश्वास नहीं किया जा सकता, यदि शब्द, शब्द की ऊर्जा, मन की ऊर्जा, अक्षुण्ण है, तो फिर इस बारे में भी विश्वास किया जा सकता है कि यह ऊर्जा अपेक्षित प्रभाव पैदा कर सकती है। कालिदास ने हिमालय की राजधानी का नाम औषधीप्रस्थ अर्थात् जड़ी बूटियों का नगर कहा है, महाकवि भारवि ने भी अपने महाकाव्य कीरताजुर्निय में हिमालय की औषधियों का वर्णन है। ऐसी संभावना है कि जब पुराकाल में यहां पर आयुर्वेद और

वैद्यक शास्त्र के केंद्र रहे होंगे भारत के विभिन्न भागों से वैद्य इन स्थानों में जाकर जंगलों से औषधियों का संकलन करना समीचीन होगा।

नाथ पंथी पांडुलिपियों की भाषा /शैली: नाथपंथी पांडुलिपियों का संकलन समस्त उत्तराखंड के इलाकों में हुआ है, पौड़ी गढ़वाल के देवलगाढ़ परगने में अभूतपूर्व प्रगति हुई है, घटथापना, नादवुद, मंत्रावली, चौड़िया वीर मसाण, समैण, छिद्रावली, इंद्रजाल, जंत्र विधि, हथ हणमंत, नर्सिंगवाली, महाविद्या, विरवाली मन्त्र, नेत्रपाली मंत्र, रखवाली, नरसिंह की चौकी, चुड़ैल का मंत्र, आपरक्षा, अष्टबलि, कलुआ की रखवाली, डैण की रखवाली, फोड़ी बयाली, पंचमुखी हनुमान आदि पांडुलिपियों का संकलन हुआ है, यदि प्रयास करें तो पांडुलिपियों के संकलन में मील का पत्थर साबित हो सकता है। उपलब्ध नाथ साहित्य जिस भाषा में उपलब्ध होता है उस पर अधिक प्रभाव संस्कृत का ही है, यद्यपि नाथसिद्धों ने लोक भाषा के माध्यम से अपने विचारों को जनता के समझने लायक बना दिया था यद्यपि अधिकांश शब्दों की बनावट संस्कृत के शब्दों से स्पष्ट रूप से प्रभावित है - लेश्यतं, आदेशं, थापना आदि।

शोध प्रविधि (Research Methodology):

“नाथपंथी पांडुलिपियों में परिलक्षित परंपरागत चिकित्सा पद्धति: एक नृ-ऐतिहासिक अध्ययन (लगभग 500 ई. से 1800 ई.): उत्तराखंड के सन्दर्भ में “ प्रस्तुत मुख्यमंत्री शोध प्रकाशन प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत इतिहास और मानवविज्ञान की शोध परिपाटी के अंतर्गत सहभागी अवलोकन विधि का प्रयोग किया जाएगा, साथ ही मौखिक इतिहास, अभिलेखों एवं सनदों का पाठान्तर करना मुख्य ध्येय रहेगा. पांडुलिपियों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु दो विषय विशेषज्ञ की आवश्यकता रहेगी, जिसमें रसायन विज्ञान और वनस्पति विज्ञान के विशेषज्ञ शामिल रहेंगे। बर्नार्ड एस कोन और बी.विलियम डर्क्स ने नृ इतिहास को व्याख्यायित करते हुए कहा कि हमें मानवजातियों की जटिलताओं और विविधताओं को समझने में मदद करनी चाहिए है और हमें एक दूसरे के प्रति अधिक सहानुभूति और समझ के साथ जीने में सक्षम बनाता है। मानव जाति की विविधता को समझना, संस्कृतियों और समाजों का अध्ययन, भाषाओं और उनके विकास का विश्लेषण, रीति रिवाजों और परम्पराओं का विश्लेषण करना आवश्यक है।

ज्ञान की वर्तमान दशा (Review of Literature)

नाथपंथी पांडुलिपियों और नाथ सम्प्रदाय के इतिहास पर सर्वप्रथम जॉर्ज वेस्टन ब्रिग्स (1938)- "Gorakhnath and The Kanphata Yogis" अबोधबन्धु बहुगुणा (1976), अक्षयकुमार बनर्जी (नाथयोग), सोलंकी (1966), चन्द्रनाथ योगी (1924), गोविन्द चातक (1968), चमनलाल गौतम (1973), पीताम्बर दत्त बड़थवाल (2003), नागेन्द्रनाथ उपाध्याय (1965), पशुराम चतुर्वेदी (1972), बाबुलकर (1982), ऐ.के. बनर्जी (1964) The Nath -Yogi sampradaya and the Gorakhnath Temple और अमिताभ विक्रम

द्विवेदी(2022), Nath -Siddhas (Nathas ने समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया, एवं हिंदी विषय का समावेश किया. कुणाल, देबनाथ (2024), The Naths (Yogis, pp . 16 -46) ने मानवशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया, जहां तक नाथपंथी पांडुलिपियों में प्रतिबिंबित चिकित्सा पद्धति जड़ी बूटी का प्रश्न है, डॉ विष्णुदत्त कुकरेती ने काफी हद तक अप्रकाशित साहित्य को प्रकाश में लेकर आये। गढ़वाल और कुमाऊं में बड़े पैमाने पर नाथपंथी साहित्य उजागर हुआ है लेकिन अभी भी नाथपंथी पांडुलिपियों में मांत्रिक व जड़ी बूटी से सम्बंधित साहित्य सामने आना चाहिए। विशेषतः हिंदी, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान व मानव विज्ञान की शोध प्रविधि को चिन्हित किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कुकरेती, विष्णुदत्त, 2003, नाथपंथ :गढ़वाल के परिप्रेक्ष्य में, विद्या निकेतन प्रकाशन, हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, चौरास श्रीनगर, उत्तरांचल.
- जॉर्ज वेस्टन ब्रिग्स, 1938, गोरखनाथ एंड द कनफटा योगिस, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली.
- द्विवेदी, हजारी प्रसाद, 1950, नाथ संप्रदाय, हिन्दुस्तानी एकेडमी, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद.
- ग्रियर्सन, जी.ए., 1878 आर्टिकल, द सॉन्ग ऑफ मानिकचंद, जे एस बी ई.
- चातक, गोविन्द, 1968, गढ़वाली लोकगीत:एक सांस्कृतिक अध्ययन, राधाकृष्ण प्रकाशन-, 2, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली
- सोलंकी, कोमल सिंह, 1966, नाथपंथ और निर्गुण संत काव्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्र.सं.
- चंदोला, शांति प्रसाद, 1975, नाथ पंथ, नेपाली कोठी, वरुणा पुल, वाराणसी कैंट।
- बहुगुणा, शम्भू प्रसाद, 1957, विराट हृदय, अलकनंदा मन्दाकिनी प्रकाशन 2, लक्ष्मण भवन, हुसैनगंज, लखनऊ
- द्विवेदी, अमिताभविक्रम, 2022, नाथ सिद्ध (नाथ), रिसर्चगेट, डी ओ आई :10 . 1007 /978 -94 - 024 -1188 -1 2
- ए.के.बनर्जी, 1964, नाथ योगी सम्प्रदाय और गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर
- महू दीवाना, 1937, गोरखनाथ और मध्यकालीन हिन्दू रहस्यवाद :गोरख के मछेन्द्र, गोरख गोष्ठी, पद और श्लोकों के पाठ और अनुवाद सहित

अन्य सहायक ग्रन्थ सूची

- गोरक्षस तकम, गोरख मंदिर, गोरखपुर
- महाभारत:वनपर्व, शान्तिपर्व, सभापर्व, भीष्म पर्व
- अमनस्क योग :गोरखनाथ मंदिर, गोरखपुर, प्र० सँ० 2037
- ईशादी नौ उपनिषद :गीताप्रेस गोरखपुर, नवां संस्करण, सम्वत 2038
- श्रीमद्भागवतगीता: गीता प्रेस, गोरखपुर १४वाँ संस्करण, सम्वत 2022
- केदारखंड पुराण :खेमराज श्रीकृष्णदास श्री वेंकटेश्वर छापाखाना, मुंबई
- शाबर चिंतामणि:योग प्रचारिणी सभा के 58 /78, संवत 2035 गोरक्ष टीला मंदाकिनी, वाराणसी
- पांडेय, कुसुमलता, 1982, गढ़वाल में देव पूजन